

7008. KATHÁS. 13, 84. PAÑĀR. 1, 7, 34. 11, 37. vom Gesicht, das durch Krankheit, Sorgen, Leidenschaften ein welkes, leidendes, verstelltes Ansehen erhält: स्नायदङ्क इवावादीत् RĪĀA-TAR. 4, 95. स्नायतेषुन्मुखेन BUĀG. P. 1, 16, 20. हिमाकृतमिवाम्भोजं पलितस्नानमाननम् KATHÁS. 40, 45, 71, 64. वक्त्रमाधिस्नानम् BUĀG. P. 6, 13, 9. SPR. 3293. erschlaffen, schwach werden überh.: पदि ते ऽस्नास्यताम् ÇAT. BR. 10, 6, 2, 4. वधमुद्यस्वल्मुद्यान्चे पेतुर्मसुस्तथापरे MBH. 7, 4568. पयि — मसुतुर्न RAGH. 11, 9. BHATT. 14, 6. स्नानतीषा RĪĀA-TAR. 5, 481. MĀRK. P. 62, 16. SPR. 440. स्नानो बलवाङ्कुरप्रक्येवानुगतः सदा MBH. 4, 126. अस्मिन्निवाक्ते मा स्नासीः so v. a. den Kopf hängen lassen 1, 3391. स्नानेन्द्रिय SPR. 2012. स्नायते मे मनो कीदं मुखं च परिपुष्यति MBH. 15, 120. स्नानमनसं युधि 7, 350. ऊङ्कुरस्नानमनस्येकितानं रूपोत्तमाः 994. dahinschwinden: धातुव्यो स्नायति ÇAT. BR. 10, 6, 2, 10. स्नायति श्रीः कुलस्त्रीव गृहे बन्धक्याधिष्ठिते KATHÁS. 52, 317. स्नानलक्ष्म्या वनमालया BUĀG. P. 2, 2, 10. स्नानमुखच्छाय (स्नान gehört zu मुखच्छाया) KATHÁS. 39, 49. स्नानत्रीड v. l. für वीतत्रीड SPR. 197. स्नानमाना 3744. — स्नाते durch Gerben weich geworden: चर्मणि VĪLAKH. 7, 3; vgl. चर्मस. स्नान schmutzig (vgl. मल) H. 1433. HALĀJ. 4, 12. स्नानाङ्गी eine Frau während der Regeln TRIK. 2, 6, 6, Ind. schwarz, dunkelfarbig: धनमदमतीस्नानवक्त्रं स्नान = प्रुष्क Schol.) PRAB. 92, 18. नानस्नानमती SPR. 3739. Vgl. स्नानकं und स्नान; स्नान n. s. besonders.

- caus. welk machen, die Spannkraft benehmen: श्रेय्या स्नापयामसि AV. 6, 66, 3. स्नापयामि धृतः शिष्यम् 7, 90, 1.
- अग्नि s. अग्निस्नान und अग्निस्नान (in den Nachträgen).
- स्ना, partic. स्नास्नान welk oder ein wenig (स्ना) welk: ऽमुषारविन्द RAGH. 16, 75.
- परि verwelken, dahinwelken: वृक्षाः परिस्नानाः R. 2, 39, 8 (7 GORR.). परिस्नानाम्बुजमखी KATHÁS. 30, 31. ऽमुषारविन्द RAGH. 14, 50. BUĀG. P. 4, 8, 66. ऽमुखश्री 8, 7, 7. KUMĀRAS. 2, 2. आत्तस्य ते नृधार्तस्य परिस्नानस्य erschlafft MBH. 3, 2386. शीलशशिनः कात्तिः परिस्नायते schwindet dahin SPR. 1444. परिस्नाने माने 1720. — Vgl. अग्निस्नान, परिस्नायिन्.
- विपरि, partic. ऽस्नान vollkommen verwelkt R. 4, 13, 34.
- प्र verwelken, welk werden BHATT. 6, 13, v. l. प्रस्नाना इव च स्रजः MBH. 8, 859. 11, 717. R. GORR. 2, 37, 5. 39, 8. 73, 18. ऽबोजाङ्कुरं RAGH. 7, 24. ऽभाव KĀM. NITIS. 7, 21. प्रस्नानीभू PAÑĀR. 3, 3, 30. प्रस्नानवदन das Gesicht verziehend MBH. 7, 5130. नृत्प्रस्नानशरीरं ausgemergelt VARĀH. BRU. S. 3, 13. welk werden, dahinschwinden von einem Mädchen SPR. 1971. प्रस्नान schmutzig, verunreinigt: दत्तिनो मद्गलप्रस्नानगण्डस्थलाः 5133.
- वि welk werden: विस्नान verwelkt und zugleich um sein Ansehen gekommen KĪS. M. 1, 8. erschlaffen: पदि ते व्यस्नास्येताम् KĪND. UP. 5, 17, 2. — caus. welk machen: विदारिकां समभ्यस्य स्वित्रीं विस्नाप्य लेपयेत् SUÇR. 2, 118, 10.
- स्नान 1) partic. s. u. स्ना. — 2) n. nom. act. Welkheit, Abwesenheit alles Glanzes: von Elfenbein VARĀH. BRU. S. 93, 15. 94, 7. In der Stelle रव्यावसर्गणास्नाननुत्पानस्नानकर्मसु । आचामेत MĀRK. P. 33, 24 fehlerhaft für प्स्नान: vgl. JĪĀN. 1, 196.
- स्नानता (von स्नान 1.) f. Welkheit, Schlafheit: चेतसि DUÇRTAS. in LA. 72, 11.
- स्नानि (von स्ना) f. P. 3, 3, 95, VĀRTI. 2. UĀVAL. zu UÑĀDIS. 4, 51 (parox.). VOP. 26, 184. das Verwelken, Erschlaffung, Welkheit, das Hinschwinden:

पदं स्नानमेव्यति KATHÁS. 13, 80. SĪRĀÇ. 19 in HARB. Anth. 200. स्नानि-माला (स्नानं 16, 31; man könnte स्नानायिं vermuthen) KATHÁS. 9, 81. न चाधमसैतापङ्कः खिरप्यातयेन च । स्नानिं गच्छति वेदेव्याः स्वभावप्रभवं वपुः ॥ R. GORR. 2, 60, 14. VĀGBH. 1, 7, 9, 10. SPR. 294, v. l. विद्याधरा स्नानिं वपुः KATHÁS. 46, 79. सा दातृताकीर्तिः चेन्स्नानिं गता 280. पण्डित-शब्दः — तेस्तेर्देविर्न तु स्नानिम् — श्रापयो RĪĀA-TAR. 4, 490. मानं 585.

स्नायिन् (wie oben) adj. welk werdend SUÇR. 2, 317, 18. hinschwindend: माने स्नायिनि SPR. 2183.

स्नासु (wie oben) adj. dass. VOP. 26, 144.

स्नेहः, स्नेहः, स्नेहति DHĀTUP. 7, 25. wältschen, eine unverständliche oder fremde Sprache sprechen: न ब्राह्मणो स्नेहेत् ÇAT. BR. 3, 2, 4, 24. नार्या स्नेहति भाषाभिः MBH. 2, 2040. ब्राह्मणो न स्नेहेत्सुवै MAHĀBHĀṢYA ed. BALL. S. 18. partic. स्नेष्ट 1) unverständlich P. 7, 2, 18. VOP. 26, 111. AK. 1, 1, 3, 22. TRIK. 3, 3, 101. H. 266. an. 2, 96. MED. 1. 24. HALĀJ. 1, 141. स्नेष्टेति als Bed. von नद् VOP. 8, 32. स्नेष्टनादा निरगुः BHATT. 9, 17. — 2) = स्नान 1. TRIK. H. an. MED. — स्नेहेत् = स्नेष्ट P. 7, 2, 18. Sch. n. eine fremde Sprache HĀR. 213. — caus. मेहेयति = simpl. DHĀTUP. 32, 120.

स्नेहः PAÑĀR. 4, 3, 105 wohl Druckfehler für स्नेहः.

सुच्, स्नेचति = सुच् DHĀTUP. 7, 14 (गन्तृर्थः). aor. अस्नुच् und अस्नेचिन्त् P. 3, 1, 58. VOP. 8, 38, 58. niedergehen, zur Rast gehen: स्नेचति स्नान्या देवता न वायुः सैषानस्तमिता देवता ÇAT. BR. 14, 4, 3, 33. — intens. s. मलिसुच् fg.

- अन्तु sich aus der Ruhe oder Verborgenheit erheben, aufgehen: प्र-स्नेचती चानुस्नेचती चाप्सरसौ (VS. 13, 17) अहोरात्रे तु ते ते हि प्र च स्नेचता ऽनु च स्नेचतः ÇAT. BR. 8, 6, 2, 18. — Vgl. अन्तुस्नेचा.
- अय, partic. ऽस्नुक्त zurückgezogen, verborgen: मौ देवा दधिरे क्व-वाकामर्पमुक्तं ब्रह्म कृच्छ्रा चरन्तम् RV. 10, 32, 4.
- उप sich zurückziehen zu, sich verbergen bei (acc.): स तत रवौयधीना मूलान्यपमस्नेच ÇAT. BR. 1, 2, 3, 8.
- नि untergehen: उच्यन्पूर्वार्धा निस्नेचज्ञघनार्थः ÇAT. BR. 10, 6, 2, 1. न वै तत्र न निस्नेच (lies निमिस्नेच st. न निः) नादिषाय कदा चन KĪND. UP. 3, 11, 2. 3. निस्नेचति रवौ BUĀG. P. 3, 4, 2. 14, 8. 5, 8, 16. 21, 9. 11. = अग्निनि untergehen über (acc.): तं चेदभ्युदियात्सूर्यः शयानं कामचारतः । निस्नेचेद्वाप्यविज्ञानात् (das vorangehende अग्निं entschuldigt diesen Gebrauch) M. 2, 220. — Vgl. निस्नेक्ति figg.
- अग्निनि = सुच् mit अग्निनि M. 2, 249. Cit. beim Schol. zu KĪR. ÇR. 25, 3, 24.
- प्र niedergehen, s. unter अन्तु und vgl. प्रस्नेचती fg.
- सुच्, स्नेचति = सुच् DHĀTUP. 7, 12.
- सुच् Nebenform zu सुच्.
- उप, partic. ऽस्नुत verborgen, zurückgezogen: पूषिच्यामुर्पसुतो ऽश-यत् TBH. 3, 2, 9, 4.
- अग्निनि, partic. ऽस्नुत = अग्निनिष्नुक्त GORR. 3, 3, 27.
- स्नेहः s. स्नेहः.
- स्नेहः (von स्नेहः, स्नेहः) 1) m. gaṇa उच्छादि zu P. 6, 1, 160. a) Wältscher, Barbar H. an. 2, 65. MED. kh. 3. HALĀJ. 2, 444. ÇAT. BR. 3, 2, 4, 24. M. 7, 149. 12, 43. MBH. 1, 3480. ससर्त केनतः सा गौर्हिच्छान्ब्रह्मविद्या-नपि 6685. 3, 2402. उत्तराश्रापरे स्नेहः क्रूराः 6, 372. गोपेनिप्रभवाः 7,